Class XII Session 2025-26
Subject - Hindi Core
Sample Question Paper - 10

निर्धारित समय: 3 घंटे **अधिकतम अंक: 80**

सामान्य निर्देश:

- निम्नलिखित निर्देशों को बहुत सावधानी से पढ़िए और उनका पालन कीजिए :-
- यह प्रश्न-पत्र तीन खण्डों में विभाजित है।
- खंड - क में अपठित बोध पर आधारित प्रश्न पूछे गए हैं। सभी प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
- खंड - ख में पाठ्यपुस्तक अभिव्यक्ति और माध्यम से प्रश्न पूछे गए हैं। प्रश्नों में आंतरिक विकल्प दिए गए हैं।
- खंड - ग में पाठ्यपुस्तक आरोह तथा वितान से प्रश्न पूछे गए हैं। प्रश्नों में आंतरिक विकल्प दिए गए हैं।
- तीनों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
- यथासंभव तीनों खंडों के प्रश्नों के उत्तर क्रमशः लिखिए।

खंड क (अपठित बोध)

1. **निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए- (10)** **[10]**

राष्ट्र केवल जमीन का टुकड़ा ही नहीं, बल्कि हमारी सांस्कृतिक विरासत होती है, जो हमे अपने पूर्वजो से परंपरा के रूप में प्राप्त होती है, जिसमे हम बड़े होते है, शिक्षा पाते हैं और साँस लेते हैं-हमारा अपना राष्ट्र कहलाता है और उसकी पराधीनता व्यक्ति की परतंत्रता की पहली सीढ़ी होती है। ऐसे ही स्वतंत्र राष्ट्र की सीमाओ में जन्म लेने वाले व्यक्ति का धर्म, जाति, भाषा या संप्रदाय कुछ भी हो, आपस मे स्नेह होना स्वाभाविक है। राष्ट्र के लिए जीना और काम करना, उसकी स्वतंत्रता तथा विकास के लिए काम करने की भावना, राष्ट्रीयता कहलाती है।

जब व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति से धर्म, जाति, कुल आदि के आधार पर व्यवहार करता है, तो उसकी दृष्टि संकुचित हो जाती है। राष्ट्रीयता की अनिवार्य शर्त है-देश को प्राथमिकता, भले ही हमे 'स्व' को मिटाना पड़े।

महात्मा गाँधी, तिलक, सुभाषचंद्र बोस आदि के कार्यों से पता चलता है कि राष्ट्रीयता की भावना के कारण उन्हें अनगिनत कष्ट उठाने पड़े, कितु वे अपने निश्चय मे अटल रहे। व्यक्ति को निजी अस्तित्व कायम रखने के लिए पारस्परिक सभी सीमाओं की बाधाओ को भुलाकर कार्य करना चाहिए, तभी उसकी नीतियाँ-रीतियाँ राष्ट्रीय कही जा सकती है।

जब-जब भारत में फूट पड़ी, तब-तब विदेशियो ने शासन किया। चाहे जातिगत भेदभाव हो या भाषागत तीसरा व्यक्ति उससे लाभ उठाने का अवश्य यत्न करेगा। आज देश में अनेक प्रकार के आंदोलन चल रहे है।

कहीं भाषा को लेकर संघर्ष हो रहा है, तो कही धर्म या क्षेत्र के नाम पर लोगो को निकाला जा रहा है, जिसका परिणाम हमारे सामने है। आदमी अपने अहं में सिमटता जा रहा है। फलस्वरूप राष्ट्रीय बोध का प्रभाव परिलक्षित हो रहा है।

(i) राष्ट्रीयता क्या कहलाती है? (1)

क) धर्म के प्रति निष्ठा

ख) जाति के प्रति निष्ठा

ग) राष्ट्र के लिए जीना और काम करना

घ) क्षेत्र के प्रति निष्ठा

(ii) राष्ट्रीयता की अनिवार्य शर्त क्या है? (1)

क) धर्म को प्राथमिकता देना

ख) देश को प्राथमिकता देना

ग) जाति को प्राथमिकता देना

घ) भाषा को प्राथमिकता देना

(iii) निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए - (1)

कथन (I): राष्ट्रीयता का अर्थ देश की स्वतंत्रता और विकास के लिए कार्य करना है।

कथन (II): जाति, धर्म और भाषा के आधार पर व्यवहार करना राष्ट्रीयता को बढ़ावा देता है।

कथन (III): व्यक्तिगत संकीर्णता से राष्ट्रीय बोध पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

कथन (IV): भारत में फूट का लाभ विदेशी शासन ने उठाया है।

गद्यांश के अनुसार कौन-सा/से कथन सही हैं?

क) केवल कथन (I), (III) और (IV) सही हैं।

ख) केवल कथन (II) और (IV) सही हैं।

ग) केवल कथन (I) और (II) सही हैं।

घ) केवल कथन (I) और (IV) सही हैं।

(iv) व्यक्ति की परतंत्रता की पहली सीढ़ी क्या होती है? (1)

(v) राष्ट्रीयता की भावना कैसे विकसित की जा सकती है? (2)

(vi) भारत में फूट पड़ने पर क्या होता है? (2)

(vii) आज के समय में देश में कौन-कौन से संघर्ष चल रहे हैं? (2)

2. **निम्नलिखित काव्य-पंक्तियों को ध्यान से पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए: (8)** **[8]**

जिनकी भुजाओं की शिराएँ फड़की ही नहीं,
जिनके लहू में नहीं वेग है अनल का
शिव का पादोदक है पेय जिनका रहा,
चखा ही जिन्होंने नहीं स्वाद हलाहल का
जिनके हृदय में कभी आग सुलगी ही नहीं
ठेस लगते ही अहंकार नहीं छलका।
जिनको सहारा नहीं भुज के प्रताप का है,
बैठते भरोसा किए वे ही आत्मबल का।
उसकी क्षमा, सहिष्णुता का है महत्त्व ही क्या
करना ही आता नहीं जिनको प्रहार है?
करुणा, क्षमा को छोड़ और क्या उपाय उसे
ले न सकता जो बैरियों से प्रतिकार है?
सहता प्रहार कोई विवश, कदर्य जीव
जिसकी नसों में नहीं पौरुष की धार है;
करुणा, क्षमा हैं क्लीव जाति के कलंक घोर,
क्षमता क्षमा की शूरवीरों का सिंगार है।।

i. **निम्नलिखित काव्यांश के अनुसार, निम्नलिखित कथनों पर विचार करें और सही विकल्प का चयन करें: (1)**

कथन I: शूरवीरों की क्षमा और सहिष्णुता उनके साहस का प्रतीक है।

कथन II: जो प्रतिकार करने में असमर्थ है, उसकी क्षमा और करुणा का कोई महत्त्व नहीं।

कथन III: क्षमा और करुणा केवल निर्बल और क्लीव जाति के लक्षण हैं।

कथन IV: पौरुष और प्रताप के बिना आत्मबल संभव नहीं है।

विकल्प:

क) कथन I और II सही हैं।

ख) कथन II और III सही हैं।

ग) कथन I, II और IV सही हैं।

घ) कथन I, II, III और IV सही हैं।

ii. **कविता के अनुसार, 'करुणा, क्षमा को छोड़ और क्या उपाय उसे' से कवि क्या कह रहे हैं? (1)**

क) करुणा और क्षमा की महत्वता

ख) प्रतिकार के बिना समाधान

ग) शौर्य और शक्ति के बिना जीवन

घ) शांति और संतुलन की खोज

iii. **नीचे दिए गए कॉलम 1 को कॉलम 2 से सुमेलित करें और सही विकल्प का चयन करें: (1)**

कॉलम 1	कॉलम 2
I. साहस और पौरुष	1. शूरवीरों का सिंगार।
II. क्षमा और करुणा	2. क्लीव जाति का कलंक।
III. आत्मबल	3. भुज के प्रताप पर आधारित।

क) I - (2), II - (3), III - (1)

ख) I - (1), II - (2), III - (3)

ग) I - (1), II - (3), III - (2)

घ) I - (3), II - (2), III - (1)

iv. **कविता में 'शिव का पादोदक' से क्या संकेत मिलता है? (1)**

v. **कविता के अनुसार, क्यों करुणा और क्षमा को 'क्लीव जाति के कलंक' के रूप में देखा गया है? (2)**

vi. **कविता के अनुसार, 'सहता प्रहार कोई विवश, कदर्य जीव' का क्या तात्पर्य है? (2)**

खंड- ख (अभिव्यक्ति और माध्यम पाठ्यपुस्तक के आधार पर)

3. **दिए गए तीन विषयों में से किसी एक विषय पर आधारित लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेखन लिखिए।** **[6]**

i. **नैतिक शिक्षा क्यों ज़रूरी** विषय पर अनुच्छेद लिखिए। **[6]**

ii. **सीमा पर नियुक्त भारतीय सैनिक** विषय पर निबंध लिखिए। **[6]**

iii. **पहाड़ों में जीवन** विषय पर रचनात्मक लेख लिखिए। **[6]**

4. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये: (2 X 4 = 8)** **[8]**

i. जनसंचार किसे कहते हैं? **[2]**

ii. **चुनाव-प्रचार का एक दिन** - विषय पर एक आलेख लिखिए। **[2]**

iii. नाटक लिखते समय 'समय के बंधन' को याद रखना क्यों जरूरी है? **[2]**

iv. **उषा** कविता के आधार पर बताइए कि भोर के नभ और राख से लीपे गए चौके में क्या समानता है। **[2]**

v. भूमंडलीकरण के इस दौर में भगत जी जैसे लोग क्या प्रेरणा देते हैं? **बाज़ार दर्शन** के आधार पर उत्तर दीजिए। **[2]**

5. **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर दीजिये: (4 X 2 = 8)** **[8]**

i. विशेष लेखन करने वाले विषय विशेषज्ञों की विशेषताएँ लिखिए। **[4]**

ii. **संपादक के नाम पत्र** पर टिप्पणी कीजिए। **[4]**

iii. शिरीष आज के संदर्भ में हमें क्या संदेश देता है? **शिरीष के फूल** पाठ के आधार पर लिखिए। **[4]**

खंड- ग (आरोह भाग - 2 एवं वितान भाग-2 पाठ्यपुस्तकों के आधार पर)

6. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:** **[5]**

जन्म से ही वे अपने साथ लाते हैं कपास
पृथ्वी घूमती हुई आती है उनके बेचैन पैरों के पास
जब वे दौड़ते हैं बेसुध
छतों को भी नरम बनाते हुए

दिशाओं को मृदंग की तरह बजाते हुए
जब वे पेंग भरते हुए चलते आते हैं
डाल की तरह लचीले वेग से अकसर
अगर वे कभी गिरते हैं छतों के खतरनाक किनारों से
और बच जाते हैं तब तो
और भी निडर होकर सुनहले सूजर के सामने आते हैं
पृथ्वी और भी तेज घूमती हुई आती है
उनके बेचैन पैरों के पास।

i. पृथ्वी किनके बेचैन पैरों के पास घूमती हुई आती है?

क) तितलियों के	ख) खरगोश के
ग) किनारों के	घ) बच्चों के

ii. पतंग उड़ाने वाले बच्चे दिशाओं को किसके समान बजाते हैं?

क) वीणा के समान	ख) ढोल के समान
ग) मृदंग के समान	घ) बाँसुरी के समान

iii. काव्यांश में कपास किसका प्रतीक है?

क) शांति का	ख) प्रकाश का
ग) क्षणभंगुरता का	घ) कोमलता का

iv. पतंग उड़ाते हुए बच्चे किसके सहारे स्वयं भी उड़ते से दिखाई देते हैं?

क) रंध्रों के	ख) कल्पना के
ग) पंखों के	घ) धागे के

v. कवि को बच्चों का दौड़ना किसकी तरह प्रतीत होता है?

क) खरगोश की तरह	ख) झूले की पेंग की तरह
ग) मछली की तरह	घ) सरकस के बंदर की तरह

7. **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:** **[6]**

i. पाँती बँधे से कवि उमाशंकर जोशी का क्या तात्पर्य है? **[3]**

ii. यहाँ कवि तुलसी के दोहा, चौपाई, सोरठा, कवित्त, सवैया- ये पाँच छंद प्रयुक्त हैं। इसी प्रकार तुलसी साहित्य में और छंद तथा काव्य-रूप आए हैं। ऐसे छंदों व काव्य-रूपों की सूची बनाएँ। **[3]**

iii. कवि कुंवर नारायण के अनुसार कोई बात पेचीदा कैसे हो जाती है? **[3]**

8. **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:** **[4]**

i. **पतंग** कविता के आधार पर पृथ्वी का प्रत्येक कोना बच्चों के पास स्वतः कैसे आ जाता है? **[2]**

ii. कैमरे में बंद अपाहिज कविता समाज की किस विडंबना को प्रस्तुत करती है? **[2]**

iii. **बादल राग** कविता में कवि ने अट्टालिका को **आतंक-भवन** क्यों कहा है? **[2]**

9. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:** **[5]**

एक-एक बार मुझे मालूम होता है कि यह शिरीष एक अद्भुत अवधूत है। दुःख हो या सुख, वह हार नहीं मानता। न ऊधो का लेना, न माधो का देना। जब धरती और आसमान जलते रहते हैं, तब भी यह हजरत न जाने कहाँ से अपना रस खींचते रहते हैं। मौज में आठों याम मस्त रहते हैं। एक वनस्पतिशास्त्री ने मुझे बताया है कि यह उस श्रेणी का पेड़ है जो वायुमण्डल से अपना रस खींचता है। जरूर खींचता होगा। नहीं तो भयंकर लू के समय इतने कोमल तंतुजाल और ऐसे सुकुमार केसर को कैसे उगा सकता था? अवधूतों के मुँह से

ही संसार की सबसे सरस रचनाएँ निकली हैं। कबीर बहुत-कुछ इस शिरीष के समान ही थे, मस्त और बेपरवा, पर सरस और मादक। कालिदास भी जरूर अनासक्त योगी रहे होंगे। (हजारी प्रसाद द्विवेदी)

i. लेखक ने शिरीष को अवधूत क्यों कहा है?

क) अपनी जगह से न हटने के कारण

ख) दु:ख-सुख में हार नहीं मानता

ग) वह हर तरह की परेशानी से लड़ने में सक्षम होता है

घ) सभी विकल्प सही हैं

ii. अनासक्त योगी किसे कहा गया है?

क) तुलसीदास को

ख) कबीर को

ग) वात्स्यायन को

घ) कालिदास को

iii. लेखक ने कबीर की किस विशेषता पर प्रकाश डाला है?

क) मस्त

ख) सभी विकल्प सही हैं

ग) मादक

घ) सरस

iv. निम्नलिखित कथन (A) तथा कारण (R) को ध्यानपूर्वक पढ़िए। उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए।

कथन (A): कबीर को लेखक ने अवधूत कहा है।

कारण (R): वह मस्त और बेपरवा थे।

क) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।

ख) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।

ग) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

घ) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

v. गद्यांश के आधार पर निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-

i. शिरीष वायुमंडल से अपना रस खींचता है।

ii. अवधूत सरस नहीं होते हैं।

iii. कालिदास एक आसक्त योगी थे।

उपरिलिखित कथनों में से कौन सही है/हैं?

क) केवल iii

ख) सभी विकल्प सही हैं

ग) केवल ii

घ) केवल i

10. **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:** **[6]**

i. पहलवान की ढोलक पाठ में महामारी फैलने के बाद गाँव में सूर्योदय और सूर्यास्त के दृश्य में क्या अंतर होता था? **[3]**

ii. दो कन्या-रत्न पैदा करने पर भक्तिन पुत्र-महिमा में अंधी अपनी जिठानियों द्वारा घृणा व उपेक्षा का शिकार बनी। ऐसी घटनाओं से ही अकसर यह धारणा चलती है कि स्त्री ही स्त्री की दुश्मन होती है। क्या इससे आप सहमत हैं? **[3]**

iii. लेखक **बाबा साहेब भीमराव आंबेडकर** के आधार पर भारत की जाति-प्रथा क्या-क्या काम करती है? **[3]**

11. **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:** **[4]**

i. बाज़ार का जादू क्या है? इसके चढ़ते-उतरने का क्या प्रभाव पड़ता है? समझाकर लिखिए। **[2]**

ii. नदियों का भारतीय सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश में क्या महत्व है? **[2]**

iii. **दासता केवल कानूनी पराधीनता ही नहीं है** डॉ. आंबेडकर के इस कथन को स्पष्ट कीजिए। **[2]**

12. **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:** **[10]**

i. यशोधर बाबू ने किशन दा से किन जीवन मूल्यों को पाया था? उनका उल्लेख करते हुए बताइए कि आपके लिए भी वे उपयोगी हो सकते हैं तो कैसे? **[5]**

ii. किस घटना से पता चलता है कि लेखक की माँ उसके मन की पीड़ा समझ रही थी? **जूझ** कहानी के आधार पर बताइए। **[5]**

iii. कैसे कहा जा सकता है **सिंधु सभ्यता आडंबर विहीन सभ्यता थी?** उदाहरण सहित **अतीत में दबे पाँव** के आधार पर स्पष्ट कीजिए। **[5]**

उत्तर

खंड क (अपठित बोध)

1. (i) ग) राष्ट्र के लिए जीना और काम करना

(ii) ख) देश को प्राथमिकता देना

(iii) क) केवल कथन (I), (III) और (IV) सही हैं।

(iv) राष्ट्र की पराधीनता व्यक्ति की परतंत्रता की पहली सीढ़ी होती है।

(v) राष्ट्रीयता की भावना विकसित करने के लिए व्यक्ति को निजी अस्तित्व कायम रखने के लिए पारस्परिक सभी सीमाओं की बाधाओं को भुलाकर कार्य करना चाहिए।

(vi) भारत में फूट पड़ने पर विदेशियों ने शासन किया और तीसरा व्यक्ति उससे लाभ उठाने का यत्न करता है।

(vii) आज के समय में देश में भाषा, धर्म, और क्षेत्र के नाम पर संघर्ष चल रहे हैं।

2. i. घ) कथन I, II, III और IV सही हैं।

ii. ख) प्रतिकार के बिना समाधान

iii. ख) I - (1), II - (2), III - (3)

iv. 'शिव का पादोदक' से संकेत मिलता है कि कवि उन लोगों की बात कर रहे हैं जिनका आदर्श और जीवन शिव की तपस्या और आत्म-संयम के सिद्धांतों पर आधारित है।

v. कविता के अनुसार, करुणा और क्षमा को 'क्लीव जाति के कलंक' के रूप में देखा गया है क्योंकि ये गुण वीरता और शक्ति के अभाव के प्रतीक माने जाते हैं। कवि का मानना है कि करुणा और क्षमा शूरवीरों की पहचान नहीं होतीं और ये गुण बल और प्रतिकार की कमी का संकेत देते हैं।

vi. 'सहता प्रहार कोई विवश, कदर्य जीव' का तात्पर्य है कि केवल वही व्यक्ति प्रहार सह सकता है जिसकी नसों में वीरता और शक्ति का प्रवाह नहीं होता। यह किसी कमजोरी या विवशता का संकेत है।

खंड- ख (अभिव्यक्ति और माध्यम पाठ्यपुस्तक के आधार पर)

3. दिए गए तीन विषयों में से किसी एक विषय पर आधारित लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेखन लिखिए।

(i) **नैतिक शिक्षा क्यों ज़रूरी**

नैतिक शिक्षा का अर्थ है उन मूल्यों और सिद्धांतों की शिक्षा देना जो व्यक्ति को सही और गलत का भेद समझने में मदद करते हैं। यह शिक्षा व्यक्ति के चरित्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है और उसे एक जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए प्रेरित करती है।

महत्व: नैतिक शिक्षा समाज के विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है। यह व्यक्ति को ईमानदारी, सहानुभूति, और न्याय जैसे गुणों को अपनाने के लिए प्रेरित करती है। नैतिक शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति अपने कर्तव्यों और अधिकारों के प्रति जागरूक होता है, जिससे समाज में शांति और सद्भावना बनी रहती है।

चुनौतियाँ: आज के समय में नैतिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है। तकनीकी प्रगति और आधुनिक जीवनशैली के कारण लोग नैतिकता को नजरअंदाज कर रहे हैं। इस स्थिति में नैतिक शिक्षा की आवश्यकता और भी बढ़ जाती है, ताकि लोग अपने जीवन में नैतिक मूल्यों को पुनः स्थापित कर सकें।

सरकारी प्रयास: सरकार और शैक्षणिक संस्थान नैतिक शिक्षा को पाठ्यक्रम का हिस्सा बना रहे हैं। विद्यालयों में नैतिक शिक्षा के पाठ्यक्रम को शामिल किया जा रहा है, ताकि बच्चों को प्रारंभिक अवस्था से ही नैतिक मूल्यों का ज्ञान हो सके।

निष्कर्ष: नैतिक शिक्षा व्यक्ति के संपूर्ण विकास के लिए आवश्यक है। यह न केवल व्यक्ति को एक अच्छा नागरिक बनाती है, बल्कि समाज को भी एक बेहतर स्थान बनाती है। हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि नैतिक शिक्षा को हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा बनाया जाए।

(ii) **सीमा पर नियुक्त भारतीय सैनिक**

सीमा पर भारतीय सैनिकों द्वारा सहर्ष स्वीकारी जा रही कठिन परिस्थितियाँ भी उनके जज्बे को रोक नहीं सकती सैनिक अपने अदम्य साहस व शक्ति से देश की रक्षा के लिए प्राकृतिक व मानवजनित की अनेक चुनौतियों (आपत्तियों) का सामना करते हैं। वे भीषण गर्मी, सर्दी, वर्षा, अथवा किसी भी प्रकार की प्राकृतिक आपदा में अड़े रहकर देश रक्षा के लिए तत्पर रहते हैं। सीमा पर खड़े दुश्मन उन्हें परास्त करने का कोई मौका नहीं छोड़ते पर हमारे वीर सैनिक दुश्मन की हर चाल को काटते हैं। सैनिक अपने प्रशिक्षण काल से लेकर देश सेवा के आखिरी दिन तक चुनौतियों का मुकाबला करते हैं। वास्तव में चुनौतियों का मुकाबला करने का दूसरा नाम सैनिक है। बलिदान होने वाले वीर सैनिक बाकी देशवासियों से यह अपेक्षा कर रहे हैं कि वे अब बलिदान के पथ को सूना नहीं रहने देंगे। इसलिए उन्हें प्रत्येक देशवासियों से कुछ आशाएँ है, अपेक्षाएं है कि उनके इस संसार से विदा हो जाने के बाद भी वे देश की आन, बान, शान पर आँच नहीं आने देंगे, बल्कि समय आने पर अपना बलिदान देकर देश की रक्षा करेंगे।

(iii) **पहाड़ों में जीवन: प्रकृति की गोद में अद्वितीय सुंदरता**

पहाड़ों में जीवन एक रोमांचक और प्रेरणादायक अनुभव है। इन महान शिखरों की ऊँचाइयों में समाहित एकता और विस्तार से हमें प्रकृति की महत्त्वपूर्णता को समझाती है। यहाँ के वनस्पति विविधता, पूरे वातावरण को जीवंत बनाती हैं। पहाड़ी जानवरों और पक्षियों का जीवन इन प्राकृतिक संसार में उमड़ता हैं। पहाड़ों का मधुर वातावरण शांति और प्रसन्नता का संगम हैं। यहाँ के धरातल पर उगे पेड़-पौधे हमें जीने की प्रेरणा देते हैं। पहाड़ी जीवन में उन्नति और धैर्य का प्रतीक हैं। पहाड़ों में जीने का अनुभव हमारे मन, शरीर और आत्मा को संतुष्ट करता है। यहाँ का

प्राकृतिक सौंदर्य, शांति और आनंद हमें वास्तविक जीवन की महत्त्वपूर्णता को याद दिलाता है। इसलिए, हमें इन पहाड़ों को संरक्षित रखने और प्रकृति के साथ मिलकर संतुष्ट और समर्पित जीवन जीने का प्रयास करना चाहिए।

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये: (2 X 4 = 8)

(i) जब हम व्यक्तियों के समूह के साथ प्रत्यक्ष संवाद की बजाय किसी तकनीकी या यांत्रिक माध्यम के ज़रिये समाज के विशाल वर्ग से संवाद करने की कोशिश करते हैं तो इसे जनसंचार कहते हैं।

(ii) **चुनाव-प्रचार का एक दिन**

चुनाव का समय आते ही हर राजनीतिक दल अपने प्रचार अभियान में जुट जाता है। चुनाव-प्रचार का एक दिन न केवल उम्मीदवारों के लिए बल्कि उनके समर्थकों और जनता के लिए भी बेहद महत्वपूर्ण होता है। आइए, एक दिन के चुनाव-प्रचार की झलक पर नज़र डालते हैं।

सुबह की शुरुआत- चुनाव-प्रचार का दिन सुबह जल्दी शुरू होता है। उम्मीदवार और उनके समर्थक सुबह-सुबह ही अपने प्रचार अभियान की योजना बनाते हैं। सबसे पहले, वे अपने क्षेत्र के प्रमुख स्थानों पर जाकर लोगों से मिलते हैं और अपने पक्ष में वोट देने की अपील करते हैं। इस दौरान, उम्मीदवार अपने वादों और योजनाओं को जनता के सामने रखते हैं।

रैलियों और सभाओं का आयोजन- दोपहर होते-होते, उम्मीदवार और उनके समर्थक रैलियों और सभाओं का आयोजन करते हैं। इन रैलियों में बड़ी संख्या में लोग शामिल होते हैं। उम्मीदवार अपने भाषणों में जनता को अपने पक्ष में वोट देने के लिए प्रेरित करते हैं। वे अपने विरोधियों की नीतियों की आलोचना करते हैं और अपनी पार्टी की उपलब्धियों को गिनाते हैं।

घर-घर जाकर प्रचार- शाम के समय, उम्मीदवार और उनके समर्थक घर-घर जाकर प्रचार करते हैं। वे लोगों से व्यक्तिगत रूप से मिलते हैं और उन्हें अपने पक्ष में वोट देने की अपील करते हैं। इस दौरान, वे अपने चुनावी घोषणापत्र को भी लोगों के बीच बांटते हैं और उनकी समस्याओं को सुनते हैं।

सोशल मीडिया का उपयोग- आज के डिजिटल युग में, सोशल मीडिया भी चुनाव-प्रचार का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया है। उम्मीदवार और उनकी टीम सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर सक्रिय रहते हैं। वे अपने प्रचार अभियान की तस्वीरें और वीडियो शेयर करते हैं और जनता से सीधे संवाद करते हैं। सोशल मीडिया के माध्यम से वे अपने संदेश को अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचाने की कोशिश करते हैं।

(iii) नाटक की रचना में 'समय का बंधन' अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। नाटक को शुरू से लेकर अंत तक एक निश्चित समय सीमा में पूरा होना चाहिए। चाहे नाटक का काल भूतकाल हो या भविष्य, मंच-निर्देश हमेशा वर्तमानकाल में होते हैं। इसके विपरीत, अन्य साहित्यिक विधाएँ जैसे कहानी, उपन्यास, या कविता को हम बीच में रोककर बाद में पढ़ सकते हैं, लेकिन नाटक में ऐसा संभव नहीं है।

नाटककार को यह भी ध्यान में रखना होता है कि दर्शक एक घटना को कितनी देर तक देख सकते हैं। नाटक के तीन अंक होते हैं, और प्रत्येक अंक की अवधि कम से कम 48 मिनट होनी चाहिए, ताकि समय का बंधन सही तरीके से पूरा हो सके। इस प्रकार, नाटककार को समय का ध्यान रखते हुए रचना करनी होती है।

(iv) उषा कविता के आधार पर, भोर के नभ और राख से लीपे गए चौके में समानता यह है कि दोनों चीजें प्रकृति की विरासत हैं और संघर्ष की प्रतीक हैं। भोर के नभ दिन की प्रारंभिक रोशनी और आशा को प्रकट करता है, जबकि राख चौके में अवरोधों और कठिनाइयों का प्रतीक है, जिसे पार करना आवश्यक होता है। इन दोनों के माध्यम से, समानता व्यक्ति में उद्यम, सहनशीलता और संघर्ष की भावना को प्रेरित करती है।

(v) भूमंडलीकरण के इस दौर में भगत जी जैसे लोग प्रेरणादायी हैं ये मार्गदर्शक के रूप में कार्य करते हैं। भगत जी का अपने मन पर पूर्ण नियंत्रण है इसलिए बाजार का जादू उनके मन पर अपना प्रभाव नहीं डाल पाता। बाज़ार में उनकी आँखें खुली रहती थीं, पर मन भरा होने के कारण उनका मन अनावश्यक चीज़ें खरीदने के लिए मचलता। ऐसे व्यक्ति ही बाज़ार को सार्थकता प्रदान करते हैं। भगत जी के आचरण से प्रभावित होकर लोग अनावश्यक स्पर्द्धा में नहीं पड़ेंगे। वे व्यर्थ की वस्तुएँ खरीदने बाज़ार नहीं जाएँगे। ऐसा करने से आपसी झगड़ों में कमी आएगी और समाज में शांति का वातावरण स्थापित होगा।

5. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये: (4 X 2 = 8)

(i) विषय विशेषज्ञ वे होते हैं जो रक्षा, विज्ञान, विदेश नीति जैसे विषयों पर लिखते रहे हों, उनके पास वर्षों का अनुभव हो, विश्लेषण करने की क्षमता हो, उनकी भाषा -शैली सामान्य पत्रकारों की तरह न होकर जानकारी प्रदान करने में पाठकों, श्रोताओं, दर्शकों के लिए रुचिकर और फायदेमंद हो। उदाहरण के लिए खेलों में हर्ष भोगले, नरोत्तम पुरी का नाम उल्लेखनीय है।

(ii) संपादक के नाम पत्र संपादकीय पृष्ठ पर स्थायी स्तंभ होते हैं, जिसमें पाठकों के पत्र प्रकाशित होते हैं। इसमें पाठक विभिन्न मुद्दों पर अपनी राय व्यक्त करते हैं और जन समस्याओं को उठाते हैं। इसके माध्यम से नए लेखकों के लिए लेखन की शुरूआत करने का अवसर मिलता है। इस प्रकार यह एक महत्त्वपूर्ण स्तंभ है।

(iii) 'शिरीष के फूल' द्विवेदी जी का उत्कृष्ट निबंध है। इसके माध्यम से लेखक हमें यह संदेश देना चाहता है कि जिस प्रकार शिरीष का फूल; लू, गर्मी, आँधी और शुष्क मौसम में भी खिलकर अपना सौंदर्य बिखेरता रहता है, उसी प्रकार हमें भी जीवन के संघर्षों का सामना करते हुए प्रसन्नतापूर्वक जीवन जीना चाहिए। लेखक के अनुसार हमारी जिजीविषा भी ऐसी होनी चाहिए कि जब हमें कहीं से भी पोषण और नमी न मिल सके, तब हम अपनी आत्मा से बल से पोषण पा सकें, जिससे हम विकट स्थिति में भी सुकोमल सौंदर्यमयी जीवन को बनाने में अपने आपको सक्षम बना पाएँ।

खंड- ग (आरोह भाग - 2 एवं वितान भाग-2 पाठ्यपुस्तकों के आधार पर)

6. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:**

जन्म से ही वे अपने साथ लाते हैं कपास
पृथ्वी घूमती हुई आती है उनके बेचैन पैरों के पास
जब वे दौड़ते हैं बेसुध
छतों को भी नरम बनाते हुए
दिशाओं को मृदंग की तरह बजाते हुए
जब वे पेंग भरते हुए चलते आते हैं

डाल की तरह लचीले वेग से अकसर
अगर वे कभी गिरते हैं छतों के खतरनाक किनारों से
और बच जाते हैं तब तो
और भी निडर होकर सुनहले सूजर के सामने आते हैं
पृथ्वी और भी तेज घूमती हुई आती है
उनके बेचैन पैरों के पास।

(i) **(घ)** बच्चों के
व्याख्या:
बच्चों के

(ii) **(ग)** मृदंग के समान
व्याख्या:
मृदंग के समान

(iii) **(घ)** कोमलता का
व्याख्या:
कोमलता का

(iv) **(क)** रंध्रों के
व्याख्या:
रंध्रों के

(v) **(ख)** झूले की पेंग की तरह
व्याख्या:
झूले की पेंग की तरह

7. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:
(i) 'पाँती बँधे' से कवि का तात्पर्य पंक्तिबद्ध होकर आकाश में उड़ रहे बगुलों से है। जिस प्रकार ऊँचे आकाश में बगुले पंक्ति बाँधकर एक साथ चलते हैं, उससे उनका सौंदर्य इतना मनमोहक और आकर्षक हो जाता है कि कवि उस दृश्य को देखकर सम्मोहित हो उठता है।
(ii) तुलसीदासजी ने इसके अतिरिक्त बरवै, हरिगीतिका तथा छप्पय जैसे छंदों का भी प्रयोग किया है। इसी प्रकार तुलसीदासजी ने प्रबंध काव्य के रूप में रामचरितमानस ,रामलला नहछू, जानकी मंगल, मुक्तक काव्य रूप में विनयपत्रिका तथा गेय पद शैली में कृष्ण गीतावली, गीतावली तथा विनयपत्रिका की रचना की है।
(iii) कवि कहता है कि जब अपनी बात को सहज रूप से न कहकर तोड़-मरोड़ कर या घुमा-फिराकर कहने का प्रयास किया जाता है तो बात उलझती चली जाती है। ऐसी बातों के अर्थ श्रोता या पाठक समझ नही पाता। वह मनोरंजन तो पा सकती है परंतु कवि के भावों को समझने में असमर्थ होता है। कभी-कभी तो बात उलझ जाती है और यदि मजे के लिए लोग उसे समर्थन देने लगते हैं तो उसे स्पष्ट करने के चक्कर में बात पेचीदा हो जाती है।

8. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:
(i) जब बच्चे पतंग उड़ाते हैं, तो उनकी इच्छा होती है कि उनकी पतंग सबसे ऊँची रहे, क्योंकि पतंग के माध्यम से वे सारे ब्रह्मांड में घूम लेना चाहते हैं। वे कल्पना की रंगीन दुनिया में खो जाते हैं, इसलिए उनके लिए पृथ्वी का प्रत्येक कोना अपने आप सिमटता चला जाता है अर्थात् पतंग उड़ाने के समय बच्चों के सामने पृथ्वी का कोना-कोना सिमट जाता है।
(ii) कैमरे में बंद अपाहिज यह कविता एक अपाहिज के साथ घटित होने वाले अमानवीय व्यवहार को अभिव्यक्त करती है। यह समाज के उन अवसरवादी लोगों पर व्यंग्य करती है जिनकी दृष्टि में असहाय, मजबूर लोगों का कोई अस्तित्व ही नहीं है। वे उनके दुख को अपने फायदे के लिए प्रयोग करते हैं। मीडिया इसी मतलबी समाज की वास्तविकता को प्रस्तुत करने का माध्यम है किन्तु वर्तमान में इसका व्यवसायीकरण हो चुका है। आज समाज के इन्हीं प्रभुत्वशाली लोगों का मीडिया पर आधिपत्य है यह विडम्बना नहीं तो क्या है। कि सब कुछ जानते समझते हुये भी हम इसे स्वीकार करते हैं।
(iii) 'बादल राग' कविता में कवि निराला ने लिखा है- 'अट्टालिका नहीं है रे आतंक-भवन', उन्होंने ऐसा इसलिए कहा है क्योंकि समाज का प्रभुत्वशाली पूँजीपति वर्ग इन महलों में निवास करता है। महलों में निवास करने वाला यह वर्ग हमेशा क्रांति के भय से संकित रहता है। उसका भय, उसकी आशंका इस महल को महल (अट्टालिका) नहीं रहने देते, बल्कि आतंक-भवन बना देते हैं। इस वर्ग का अस्तित्व शोषण तथा दमन में निहित है, इसलिए जब शोषक वर्ग क्रांति की बात सुनता है, तो उसके अंदर आतंक भर जाता है।

9. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:**
एक-एक बार मुझे मालूम होता है कि यह शिरीष एक अद्भुत अवधूत है। दुःख हो या सुख, वह हार नहीं मानता। न ऊधो का लेना, न माधो का देना। जब धरती और आसमान जलते रहते हैं, तब भी यह हजरत न जाने कहाँ से अपना रस खींचते रहते हैं। मौज में आठों याम मस्त रहते हैं। एक वनस्पतिशास्त्री ने मुझे बताया है कि यह उस श्रेणी का पेड़ है जो वायुमण्डल से अपना रस खींचता है। जरूर खींचता होगा। नहीं तो भयंकर लू के समय इतने कोमल तंतुजाल और ऐसे सुकुमार केसर को कैसे उगा सकता था? अवधूतों के मुँह से ही संसार की सबसे सरस रचनाएँ निकली हैं। कबीर बहुत-कुछ इस शिरीष के समान ही थे, मस्त और बेपरवा, पर सरस और मादक। कालिदास भी जरूर अनासक्त योगी रहे होंगे। (हजारी प्रसाद द्विवेदी)

(i) **(घ)** सभी विकल्प सही हैं
व्याख्या:

सभी विकल्प सही हैं

(ii) **(घ)** कालिदास को

व्याख्या:

कालिदास को

(iii) **(ख)** सभी विकल्प सही हैं

व्याख्या:

सभी विकल्प सही हैं

(iv) **(घ)** कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

व्याख्या:

कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

(v) **(घ)** केवल i

व्याख्या:

केवल i

10. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:

(i) महामारी फैलने के बाद गाँव में सूर्योदय और सूर्यास्त के दृश्य में बड़ा अंतर होता था। सूर्योदय के समय कोलाहल तथा हृदय विदारक रुदन के बावजूद लोगों के चेहरे पर जीवन की चमक होती थी, लोग एक-दूसरे को सांत्वना देते हुये एक दूसरे के दुख में शामिल होते थे परन्तु सूर्यास्त होते ही परिदृश्य बदल जाता था। लोग अपने घरों में दुबक कर बैठ जाते थे। वे चूँ भी नहीं करते थे। यहाँ तक कि माताएँ अपने दम तोड़ते पुत्र को 'बेटा' कहकर अन्तिम विदाई नहीं दे पाती थी। ऐसे समय में केवल पहलवान की ढोलक की आवाज सुनाई देती थी जैसे वह महामारी को चुनौती दे रही हो।

(ii) हाँ, हम इस बात से पूरी तरह सहमत हैं क्योंकि भक्तिन के पुत्र न होने पर उसे उपेक्षा अपने ही घर की स्त्रियों अर्थात सास और जिठानियों से मिली। सास और जिठानियाँ चौकी पर बैठ कर आराम फरमाती थी क्योंकि उन्होंने लड़कों को जन्म दिया था भले ही वे किसी लायक नहीं थे और भक्तिन तथा उसकी नन्हीं बेटियों को घर और खेतों का सारा काम करना पड़ता था। यहाँं तक कि उनके खाने पीने में भी अन्तर था जेठानियों के लड़के दूध-मलाई खाते और लड़कियाँं मोटा अनाज।लड़कियाँं होने के बावजूद उसके पति का भक्तिन के प्रति स्नेह कभी भी कम नहीं हुआ। मेरे हिसाब से किसी भी घर में बिना स्त्री की सहमति के भ्रूणहत्या, दहेज़ की माँग, परिवार में बेटा-बेटी में अंतर, बेटी-बहुओं पर अत्याचार आदि नहीं किया जा सकता।

(iii) भारत की जाति-प्रथा को आधुनिक समाज उचित नहीं मानता है। लेखक के आधार पर भारत की जाति-प्रथा श्रमिकों का अस्वाभाविक विभाजन तो करती ही है, साथ-साथ विभाजित वर्गों को एक-दूसरे की अपेक्षा ऊँच-नीच का अहसास भी करा देती है, जो सर्वथा अनुचित है। इससे देश में विषमता की भावना प्रबल होती है तथा भ्रष्टाचार भी फैलता है। ऐसा विश्व के किसी भी समाज में नहीं पाया गया।

11. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:

(i) बाज़ार के तड़क-भड़क और रूप-सौंदर्य से जब ग्राहक खरीददारी करने को मजबूर हो जाता है तो उसे बाज़ार का जादू कहते हैं। बाज़ार का जादू तब सिर चढ़ता है जब मन खाली हो। मन में निश्चित भाव ने होने के कारण ग्राहक हर वस्तु को अच्छा समझता है तथा अधिक आराम व शान के लिए गैर ज़रूरी चीज़े खरीदता है। इस तरह वह जादू की गिरफ्त में आ जाता है। वस्तु खरीदने के बाद उसे पता चलता है कि फैंसी चीज़ें आराम में मदद नहीं करतीं, बल्कि खलल उत्पन्न करती हैं। इससे वह झुँझलाता है, परंतु उसके स्वाभिमान को सेंक मिल जाती है।

(ii) भारतीय संस्कृति में नदियों के किनारे मानव सभ्यताएँ फली-फूली हैं। बड़े-बड़े नगर तीर्थस्थान नदियों के किनारे ही स्थित हैं ऐसे परिवेश में भारतवासी सबसे पहले गंगा मैया की जय ही बोलेंगे। नदियाँ हमारे जीवन का आधार हैं, हमारा देश कृषि प्रधान है। नदियों के जल से ही भारत भूमि हरी-भरी है। नदियों के बिना जीवन की कल्पना नहीं कर सकते, यही कारण है कि हम भारतीय नदियों की पूजा करते हैं।

(iii) लेखक के अनुसार, 'दासता' की परिभाषा वह है जिसमें किसी को किसी प्रकार की स्वतंत्रता न हो। यहाँ तक कि वह अपना व्यवसाय भी स्वयं न चुन सके। इसका सीधा अर्थ निकलता है कि उसे 'दासता' की जकड़ में रखा जाता है। 'दासता' केवल कानूनी पराधीनता को ही नहीं कहा जाता, बल्कि दासता में वे सभी स्थितियां शामिल है, जिसमें कुछ व्यक्तियों को दूसरे लोगों द्वारा निर्धारित व्यवहार एवं कर्तव्य का पालन करने के लिए न चाहते हुए विवश होना पड़ता है। यह स्थिति कानूनी पराधीनता न होने पर भी पाई जा सकती है। इस प्रकार की स्थिति में भी व्यक्ति को अपना जीवन विवश होकर जीना पड़ता है, जिसके फलस्वरूप वह मानसिक रूप से स्वस्थ एवं संतुष्टि का जीवन व्यतीत नहीं कर पाता।

12. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:

(i) यशोधर बाबू ने किशनदा से अनुशासन, कार्यनिष्ठा, सिद्धांतप्रियता, पारंपरिक मूल्यों का सम्मान, सादा जीवन, समय का पाबंद, कृतज्ञता, धार्मिक मूल्यों में आस्था इत्यादि जीवन-मूल्यों को पाया था।
जी हाँ, वे जीवन-मूल्य हमारे लिए भी उपयोगी हो सकते हैं। क्योंकि हमें किशनदा का जीवन-मूल्य सामाजिक, सांस्कृतिक और भावात्मक दृष्टिकोण से अनुकूल लगता है। लेकिन हर स्थान पर हम पुराने विचारों और मूल्यों को ढोते हुए आगे नहीं बढ़ सकते हैं। अतः उन जीवन-मूल्यों में से कुछ हमारे लिए उपयोगी हैं तो कुछ अनुपयोगी भी हो सकते हैं।

(ii) लेखक पढ़ना चाहता था और उसके पिता उसे पढ़ाने के बजाए उससे खेत का काम, पशु चराने का काम कराना चाहते थे। पिता ने अपनी इच्छा को ध्यान में रखकर ही लेखक की पढ़ाई छुड़वा दी थी। इसी बात से लेखक बहुत ही परेशान रहता था। उसका मन दिन-रात अपनी पढ़ाई जारी रखने की योजनाएँ बनाता रहता था। जब लेखक ने अपनी माँ से पढ़ाई के संबंध में बात किया तो माँ ने लेखक का साथ देने की बात को तुरंत स्वीकार कर लिया। योजना के अनुसार लेखक ने अपनी माँ से दत्ता जी राव सरकार के घर चलकर उनकी मदद से अपने पिता को राजी करने

की बात कही। अपने बेटे की पढ़ाई के बारे में वह दत्ता जी राव से जाकर बात भी करती है और पति से इस बात को छिपाने का आग्रह भी करती है। इससे स्पष्ट होता है कि वह लेखक के मन की पीड़ा को समझती थी।

(iii)सिंधु सभ्यता को आडंबर विहीन सभ्यता कहा जा सकता है, और इसके कई प्रमाण “अतीत में दबे पाँव” पाठ में मिलते हैं। आइए, इसे कुछ उदाहरणों के माध्यम से समझते हैं:

i. **साधन-संपन्नता और सादगी**
   - सिंधु सभ्यता अत्यंत साधन-संपन्न थी, लेकिन इसमें भव्यता का आडंबर नहीं था। मुअनजो-दड़ो और हड़प्पा जैसे शहरों की खुदाई में मिली वस्तुएँ और निर्माण शैली इस बात का प्रमाण हैं। यहाँ के लोग अपनी आवश्यकताओं के अनुसार निर्माण करते थे, न कि दिखावे के लिए।
   - उदाहरण: मुअनजो-दड़ो की जल-निकासी व्यवस्था और अन्न-भंडारण प्रणाली अत्यंत विकसित थी, लेकिन इसमें कोई भव्यता नहीं थी।

ii. **समाज-पोषित सौंदर्य-बोध**
   - सिंधु सभ्यता का सौंदर्य-बोध समाज-पोषित था, न कि राज-पोषित या धर्म-पोषित। यहाँ की कला और वास्तुकला में समाज की आवश्यकताओं और सुरुचि का ध्यान रखा गया था।
   - उदाहरण: यहाँ की मूर्तियाँ, मृद्-भांडे, और मुहरें समाज की सुरुचि और कला-बोध को दर्शाती हैं, न कि किसी राजा या धर्म के प्रभाव को।

iii. **अनुशासन और समझ**
   - सिंधु सभ्यता ताकत से शासित होने की बजाय समझ से अनुशासित थी। यहाँ के नगर-नियोजन और सामाजिक व्यवस्थाएँ इस बात का प्रमाण हैं कि यहाँ के लोग समझदारी से अपने समाज का संचालन करते थे।
   - उदाहरण: मुअनजो-दड़ो और हड़प्पा में मिले अवशेषों में हथियारों की कमी यह दर्शाती है कि यहाँ का समाज सैन्य शक्ति पर निर्भर नहीं था।